पंजाब की लोककथाएं

पंजाब की लोककथाएं

श्रीमती विजय चौहान

राजपाल

मूल्य : तीस रुपये (Rs. 30.00)

संस्करण : 2006 © राजपाल एण्ड सन्ज़

ISBN : 81-7028-366-3
PUNJAB KI LOK-KATHAYEN (Folk Tales) by Shrimati Vijay Chauhan
राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

क्रम

पाँचफूल रानी	5
चतुर मिरासी	10
उल्टी अक्ल	14
बहादुर जट्टी	19
गुणवती लड़की	23
नमक-मिर्च	28
आधा	32
मिसर झागड़ू	36
चोर चतरा	44

पाँचफूल रानी

किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके पाँच बेटे थे। चार की तो शादी हो गई थी, पाँचवाँ अभी कुँवारा था। घर से सबसे छोटा होने की वजह से सब लोग उसे बहुत प्यार करते थे, इसलिए लाड़-प्यार से वह बिगड़ गया था। सारा दिन इधर-उधर आवारागर्दी करता या गप्पें मारता रहता था।

अपनी भाभियों से भी उसकी नहीं पटती थी। वह उनके हर काम में गलती निकालता था। एक दिन उसकी बड़ी भाभी उसे खाना परोस रही थी। लड़के ने थाली में से रोटी उठाकर जमीन पर फेंक दी और कहा, "ये रोटियाँ हैं ? आधी कच्ची, आधी जली हुई !"

भाभी ने कहा, "इतना नखरेवाला है तो क्यों नहीं जाकर पाँचफूल रानी से शादी कर लाता ? हम भी देखेंगी, वह तुम्हें कितनी पतली रोटियाँ बनाकर खिलाती है।"

लड़का गुस्सैल तो था ही, फौरन यह कहकर घर से चला गया, "अब तो पाँचफूल रानी के हाथ की ही बनी रोटी खाऊँगा।"

किसान का लड़का चलता-चलता एक जंगल में पहुँच गया। वहाँ एक बुढ़िया की झोंपड़ी थी। लड़के ने बुढ़िया को अपनी सारी कहानी सुनाई और पूछा, "यह पाँचफूल रानी कौन है ?"

बुढ़िया ने कहा, "वह एक राजकुमारी है। राजा ने शहर से बाहर उसके लिए एक अलग महल बनवा दिया है, जिसमें वह अकेली रहती है। वह इतनी नाजुक है कि उसे रोज सुबह फूलों से तोला जाता है। उसका वजन कभी पाँच फूलों से ज़्यादा नहीं निकलता।"

किसान का लड़का वहीं बुढ़िया के पास रहने लगा।

एक दिन जंगल में किसान के लड़के को एक लोमड़ी मिली। उसने लोमड़ी को अपनी सारी समस्या बताई। लोमड़ी को उस पर तरस आ गया। उसने लड़के को एक जोड़ी खड़ाऊँ और एक टोपी दी और कहा, "इस खड़ाऊँ को पहनकर तुम जहाँ चाहो जा सकते हो। और जब तुम इस टोपी को पहनोगे तो तुम्हें कोई नहीं देख सकेगा, पर तुम सब लोगों को देख सकोगे।"

लोमड़ी किसान के लड़के को अपनी पूँछ पर बैठाकर उस महल के सामने छोड़ आई जिसमें पाँचफूल रानी रहती थी। किसान के बेटे ने टोपी सिर पर पहन ली और पैरों में खड़ाऊँ पहनकर वह सीधा पाँचफूल रानी के महल में जा पहुँचा। सचमुच पाँचफूल रानी बड़ी सुन्दर और नाजुक थी। किसान के बेटे ने कहा कि वह उसे अपने साथ घर ले जाने के लिए आया है। पाँचफूल रानी ने जवाब दिया, "आज नहीं, फिर कभी तुम्हारे साथ चलूँगी।"

अगले दिन सुबह जब माली ने पाँचफूल रानी को तोला तो वह हैरान रह गया। उसने पाँच फूलों के बजाय बाग के सारे फूल एक पलड़े में डाल दिए, फिर भी पाँचफूल रानी का पलड़ा भारी था। माली ने जाकर राजा को यह बात बताई। राजा ने वज़ीरों से पूछा कि ऐसा क्यों।

वज़ीरों ने कहा कि कोई बाहर का आदमी जरूर महल में आया है। महल का पहरा और ज्यादा सख्त कर दिया जाए। महल के

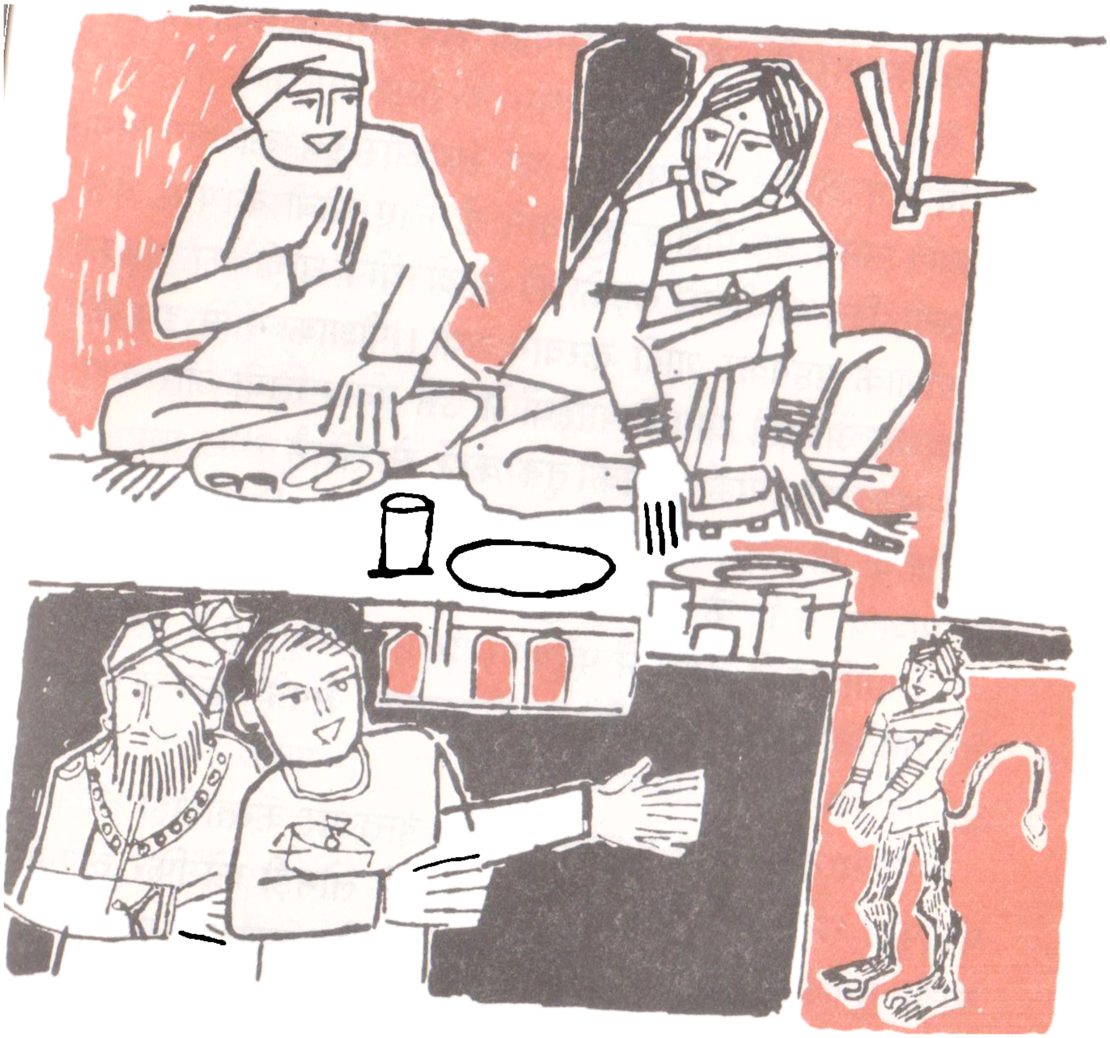

आसपास की खाई को पानी से भरकर उसमें पक्का रंग और इत्र डाल दिया जाए जो भी खाई में से होकर जाएगा, उसके कपड़ों में से इत्र की खुशबू आएगी।

किसान का बेटा एक दिन फिर पाँचफूल रानी के महल में गया और उसे अपने साथ लेकर जंगल में लौट आया।

उधर चौकीदारों ने राजा को बताया कि पाँचफूल रानी महल से गायब हो गई है। राजा के सिपाही सब जगह उसकी तलाश करने लगे।

किसान के बेटे की पोशाक पर रंग और इत्र का दाग लग गया था। उसने वह पोशाक धुलवाने के लिए धोबी के पास भेज दी। उसी दिन धोबी के लड़के की शादी थी। धोबी का लड़का वही पोशाक पहनकर शादी करवाने गया। पोशाक में से इत्र की तेज खुशबू आ रही थी। सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और कहा, "सच-सच बता, यह पोशाक तूने कहाँ से ली है ?"

धोबी के लड़के ने कहा, "जंगल में एक बुढ़िया रहती है। यह पोशाक उसी के बेटे ने धुलवाने के लिए भेजी थी।"

सिपाहियों ने जंगल में पहुँचकर देखा, पाँचफूल रानी वहाँ नहीं थी। वह किसान के बेटे की खड़ाऊँ पहनकर अपने महल में वापस आ गई थी।

किसान का बेटा बहुत दिनों तक इन्तज़ार करता रहा लेकिन पाँचफूल रानी नहीं लौटी। एक दिन उसने लोमड़ी को फिर अपनी व्यथा सुनाई। लोमड़ी ने उसे दो पुड़िया और जादू का एक मन्त्र दिया।

किसान के बेटे ने महल की मालिन के हाथ कई खत पाँचफूल रानी को भेजे, लेकिन किसी खत का जवाब न मिला।

किसान के बेटे को बड़ा गुस्सा आया। वह अपनी टोपी पहनकर

किसी तरह फिर पाँचफूल रानी के महल में जा पहुँचा। उसने लोमड़ी की दी गई पुड़िया उसके सिर पर डाल दी और लोमड़ी का बताया हुआ मन्त्र पढ़ा। देखते-ही-देखते पाँचफूल रानी एक बन्दरिया बन गई।

जब राजा को इस बात का पता चला कि उसकी लाड़ली बेटी बन्दरिया बन गई है तो वह बहुत दुःखी हुआ। उसने सारे राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो आदमी बन्दरिया को फिर से राजकुमारी बना देगा उसी के साथ राजकुमारी की शादी कर दी जाएगी। साथ में उसे आधा राज-पाट भी दे दिया जाएगा।

यह सुनकर किसान का बेटा राजा के पास आया। उसने लोमड़ी की दी हुई पुड़िया बन्दरिया के सिर पर डाली और मन्त्र पढ़ा। बन्दरिया रानी बन गई।

राजा ने किसान के बेटे को अपना दामाद बना लिया और उसे अपना आधा राज-पाट दे दिया। किसान के बेटे ने कहा, ''मैं एक बार पाँचफूल रानी को अपने घर ले जाना चाहता हूँ ताकि मेरी भाभियों का अहंकार टूट सके।''

राजा ने उन दोनों के साथ बहुत-सी फौज भेजी।

किसान के बेटे ने अपनी भाभियों से कहा, ''लो, मैं पाँचफूल रानी को लेकर आया हूँ। तुम सब तो उसकी नौकरानियाँ बनने के काबिल भी नहीं हो। आज मैं पाँचफूल रानी के हाथ की बनी हुई रोटी खाऊँगा।''

पाँचफूल रानी ने छोटी-छोटी पतली-पतली रोटियाँ और कई पकवान बना सबको खिलाए।

चतुर मिरासी

पंजाब में मिरासियों की कहानियाँ बहुत मशहूर हैं। मिरासी लोग गाना-बजाना बहुत अच्छा जानते हैं और वे अपनी चतुराई और हाजिर-जवाबी के लिए भी मशहूर हैं।

एक बार की बात है कि एक आदमी को कई दिनों से नींद नहीं आ रही थी। उसने वैद्यों-हकीमों से बहुत इलाज कराया। सिर के बालों और पैरों के तलुओं में तेल की मालिश करवाई, लेकिन रत्ती भर भी फायदा नहीं हुआ।

किसी ने उसे सलाह दी, "अगर कोई आदमी आकर तुम्हें कहानी सुनाए तो वह सुनते-सुनते तुम्हें जरूर नींद आ जाएगी।"

उसने सारे शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि अगर कोई कहानी सुनाकर मुझे सुला देगा तो मैं उसे मुँह-माँगा इनाम दूँगा और अगर कहानी सुनकर भी मुझे नींद न आई तो मैं कहानी सुनाने वाले का मुँह काला करके, सिर मुँडवाकर गधे पर चढ़ाकर सारे शहर में घुमाऊँगा।

ऐसी घोषणा सुनकर कई लोग इनाम के लालच में कहानी सुनाने आए। किसी ने पाँच कहानियाँ सुनाईं, किसी ने दस। कहानियाँ खत्म हुईं, लेकिन उस आदमी को नींद नहीं आई। कहानी कहने वालों का मुँह काला करके, सर मुँडवाकर उन्हें गधे की सवारी

कराई गई।

उसी शहर में एक मिरासी रहता था। उसने अपनी अक्ल से बड़े-बड़े लोगों के छक्के छुड़ाए थे। जब उसने यह बात सुनी तो मूँछों पर ताव देकर बोला, "अगर मैं कहानी सुनाकर उस आदमी को न सुला दूँ तो मेरा नाम बदल देना।"

मिरासी ने उस आदमी के पास आकर कहा, "मैं आज रात तुम्हें एक ऐसी कहानी सुनाऊँगा जिसे सुनकर तुम्हें फौरन नींद आ जाएगी। लेकिन एक शर्त है। कहानी सुनते वक्त तुम्हें 'हूँ' कहकर हुंकार भरना होगा।"

अब मिरासी ने अपनी कहानी शुरू की :

"बहुत पुरानी बात है। उस वक्त मेरे बाप के बाप के बाप जिन्दा थे। एक दिन मेरे बाप के बाप के बाप जंगल घूमने गए। साथ में मेरे बाप के बाप भी थे। उस जंगल में सौ पेड़ थे। हर एक पेड़ से दस-दस पिंजरे लटक रहे थे।"

"हूँ, आगे क्या हुआ ?" कहानी सुनने वाले ने पूछा।

"हर पिंजरे में दस पक्षी कैद थे।"

"हूँ।"

"मेरे बाप के बाप के बाप ने सोचा कि ये बेचारे खामखाह पिंजरों में सड़ रहे हैं, इन्हें आज़ाद कर देना चाहिए।"

"हूँ।"

"उन्होंने एक पिंजरे का दरवाज़ा खोला। एक पक्षी फुर्र से उड़ गया।"

"हूँ।"

"फिर दूसरा पक्षी फुर्र से उड़ गया।"

"हूँ।"

"फिर तीसरा पक्षी फुर्र से उड़ गया।"

"हूँ।"

मिरासी इसी तरह पक्षियों और पिंजरों की गिनती करता रहा। इस बीच उस आदमी की आँख लग गई थी।

अगले दिन जब वह सोकर उठा तो देखा कि मिरासी अभी तक कहानी सुनाए जा रहा था।

"भले आदमी, अभी तक तुम्हारी कहानी खत्म नहीं हुई ?"

"खत्म कैसे होती ? मैंने आपसे अर्ज़ की थी न कि सौ पेड़ों से पूरे हज़ार पिंजरे लटक रहे थे। अभी तो पचास पिंजरों के ही दरवाज़े खुले हैं। बाकी पिंजरों के पक्षी तो अभी तक कैद में हैं। उन्हें भी तो उड़ाना है न।"

मिरासी की चतुराई से वह आदमी बहुत खुश हुआ। उसने मिरासी को मुँह-माँगा इनाम देकर विदा किया।

उल्टी अक्ल

पंजाबी में एक कहावत है, 'जित्थे कलहा कलंदर वस्से, ओत्थे घड़ेओं पानी नस्से।' (जिस घर में कलह होती है वहाँ घड़ों का पानी सूख जाता है।)

एक किसान की बीवी हर वक्त घर में कलह मचाए रखती थी। ऐसा कोई दिन खाली नहीं जाता था जब उनके घर में झगड़ा न होता हो। किसान अगर कहता, "आज बहुत गर्मी पड़ रही है," तो वह कहती थी, "ज़रा सुन लो इसकी बात, आज तो बहुत सर्दी पड़ रही है, और इसे गर्मी लग रही है।" किसान चुप हो जाता। भला ऐसी झगड़ालू औरत से बहस कर कौन अपनी बेइज़्ज़ती करवाता।

एक दिन बारिश हो रही थी। किसान ने कहा, "भाग्यवान आज मेरा मन मठरी खाने को करता है। जल्दी से घी में मठरियाँ तल दो।" यह सुनकर उसकी बीवी गुस्से में भरकर बोली, "कहाँ से लाऊँ मठरी ? घर में न घी है, न मैदा। बैठे-बैठे मठरियों के सपने देखे रहे हो !"

मतलब यह है कि वह हर बात उल्टी ही कहती थी, क्योंकि उसकी अक्ल ही उल्टी थी।

किसान मन मसोसकर रह गया। अगले दिन गलती से वह

अपनी दराँती घर पर ही भूल गया, इसलिए वह खेत से जल्दी लौट आया। वह आकर क्या देखता है कि उसकी बीवी चूल्हे पर कढ़ाई रखे गर्म-गर्म मठरियाँ तल रही है। सारे घर में मठरियों की सुगन्ध फैल रही है। किसान के मुँह में पानी भर आया, लेकिन वह कुछ न बोला। देखते-ही-देखते उसकी बीवी सारी मठरियाँ चट कर गई और एक गिलास पानी पीकर चारपाई पर लेट गई। कुछ मठरियाँ एक पोटली में बाँधकर उसने एक सन्दूक के नीचे छिपा दीं।

किसान ने दरवाजा खटखटाया। जब बीवी ने कोठरी का दरवाजा खोला तो किसान ने कहा, "मुझे बड़ी भूख लगी है। एक-दो मठरियाँ मुझे दे दो। साथ में एक गिलास ठंडा पानी।"

"मठरियाँ ? कहाँ से आएँगी मठरियाँ ?" बीवी ने गुस्से से पूछा, "मैंने तुम्हें कल नहीं बताया था कि घर में मैदा और घी नहीं है ? तुम्हें तो हर वक्त खाने की चीज़ों के सपने दिखाई देते हैं। चटोरे कहीं के !"

किसान को बड़ा गुस्सा आया। उसने अपनी बीवी से बदला लेने की एक तरकीब सोची।

कुछ दिन बाद उसने कहा, "अरी भाग्यवान, तेरे गाँव से चिट्ठी आई है कि तेरे भाई की शादी हो रही है। तुम तो शादी में जाओगी नहीं ?"

"वाह, क्यों नहीं जाऊँगी ? मेरे भाई की शादी हो और मैं न जाऊँ, यह कैसे हो सकता है ?"

"अच्छा-अच्छा, कुछ दिन ठहरकर चली जाना। भाई की शादी में जाओगी तो कुछ गहने-कपड़े भी बनवाने पड़ेंगे। कुछ दिन रुक जाओ।"

"वाह, मैं क्यों रुकूँ ? मैं तो आज ही जाऊँगी। तुम जो चाहे

कर लो।"

किसान को अब अपनी बीवी के सारे लच्छनों का पता चल गया था। उसने कहा, "अच्छा, इस वक्त रास्ते के लिए खाना पका लो, हम लोग तीसरे पहर यहाँ से चलेंगे ?"

"तीसरे पहर क्यों चलेंगे ? मैं तो इसी वक्त जाऊँगी।" किसान की बीवी ने जवाब दिया और कपड़े पहनकर तैयार हो गई।

किसान चुपचाप अपनी बीवी के पीछे-पीछे चल पड़ा। रास्ते में एक नदी पड़ती थी। उस ज़माने में लोग गाय की पूँछ पकड़कर नदी-नाले पार किया करते थे। किसान ने अपनी बीवी से कहा, "एक गाय की पूँछ साबुत है, इसे तू पकड़ ले, दूसरी गाय की पूँछ कटी हुई है, उसे मैं पकड़ लेता हूँ।"

"नहीं-नहीं, तुम साबुत पूँछ पकड़ो, मैं कटी पूँछ पकड़ूँगी।" किसान की ज़िद्दी बीवी ने कहा।

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।" किसान ने जवाब दिया।

दोनों जने पानी में उतर गए। जब वे दोनों नदी के बीचोंबीच पहुँचे तो किसान ने बीवी को समझाया, "अरी भाग्यवान ! पूँछ को कसकर थामे रहना। कहीं ऐसा न हो कि पूँछ तुम्हारे हाथ से छूट जाए और तुम डूब जाओ।"

"मैं क्यों कसकर पूँछ पकड़ूँ ? मैं तो अभी गाय की पूँछ छोड़ दूँगी। यह लो छोड़ दी।" किसान की बीवी ने सचमुच गुस्से में आकर गाय की पूँछ छोड़ दी और वह पानी में गोते खाने लगी।

"ठहरो ! ठहरो ! तुम डूब जाओगी। मैं अभी आता हूँ।" किसान ज़ोर से चिल्लाया।

लेकिन उसकी बीवी भला क्यों उसकी बात मानती ! उसने फौरन जवाब दिया, "खबरदार, जो मुझे बचाया। तुम कौन होते हो मुझे बचाने वाले ? मैं तो डूबकर ही रहूँगी।"

किसान की बीवी को तैरना नहीं आता था। कुछ देर बाद वह सचमुच डूब गई।

किसान बड़ा उदास और परेशान हुआ। वह ज़ोर से चिल्लाया। सारा गाँव इकट्ठा हो गया। लोग नदी में किसान की बीवी की तलाश करने लगे। लेकिन किसान नदी के बहाव की ओर जाने के बजाय ऊपर की ओर जाकर अपनी बीवी की तलाश करने लगा।

लोगों ने पूछा, "यह क्या करते हो, बेवकूफ आदमी ! नदी के बहाव के बजाय ऊपर क्यों देख रहे हो ?"

"इसलिए, क्योंकि मेरी बीवी औंधी अक्ल वाली थी। हर काम उल्टा करती थी। हो सकता है, नीचे बहने की बजाय वह बहकर ऊपर चली गई हो।"

बहादुर जट्टी

✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱

पंजाब की जाट औरतों की बहादुरी मशहूर है। वे मर्दों के बराबर काम करती हैं और मुसीबत पड़ने पर भी नहीं घबरातीं।

एक दिन एक जाट ने अपनी बीवी से कहा कि सुबह जब मैं खेत में हल चला रहा था तो एक शेर ने आकर कहा, "जाट-जाट ! अपना बैल मुझे दे दो वरना मैं तुझे खा जाऊँगा।"

"तूने क्या जवाब दिया ?" जाट की बीवी जट्टी ने पूछा।

मैंने कहा, "तू यहीं रुक, मैं घर जाकर अपनी गाय ले आता हूँ। अगर तू बैल खा लेगा तो हम लोग भूखों मर जाएँगे।"

यह सुनकर जट्टी को बहुत गुस्सा आया। उसने जाट को फटकारा, "घर की गाय शेर को खिलाते तुझे शर्म नहीं आती ? अगर गाय चली गई तो घर में न दूध, न लस्सी। बच्चे रोटी किस चीज के साथ खाएँगे ?"

जट्टी को एक तरकीब सूझी। उसने कहा, "तुम फौरन खेत में जाकर शेर से कहो कि मेरी जट्टी तुम्हारे खाने के लिए एक घोड़ा लेकर आ रही है।"

जाट डरता-डरता शेर के पास गया। उसने कहा, "शेर राजा ! हमारी गाय तो बड़ी मरियल है। उससे तुम्हारा क्या बनेगा ! मेरी बीवी अभी तुम्हारे लिए एक मोटा-ताजा घोड़ा लेकर आ रही है।"

जट्टी ने सिर पर एक बड़ा-सा पग्गड़ बाँधा और हाथ में दराँती लेकर घोड़े पर सवार हो गई। घोड़ा दौड़ाती वह खेत पर पहुँची और ज़ोर से चिल्लाई, "अरे जाट ! तू तो कहता था कि तूने चार शेरों को फाँस कर रखा है। यहाँ तो सिर्फ एक ही है। बाकी कहाँ गए ?" फिर वह घोड़े से उतरकर शेर की तरफ बढ़ी और कहने लगी, "अच्छा, कोई बात नहीं, नाश्ते में एक ही शेर काफी है।"

इतना सुनना था कि शेर डर से काँपने लगा और भाग खड़ा हुआ।

यह देखकर जट्टी बोली, "देखा, इसे कहते हैं हिम्मत ! तुम तो इतने डरपोक हो कि घर की गाय शेर के हवाले कर रहे थे। यही तुम्हारी मर्दानगी है ? इससे तो अच्छा हो कि तुम चूड़ियाँ पहनकर घर में बैठो।"

उधर मारे भूख के शेर की आँतें छटपटा रही थीं। एक भेड़िए ने पूछा, "महाराज, क्या मामला है, आप आज बहुत उदास दिखाई दे रहे हैं !"

शेर ने कहा, "कुछ न पूछो, आज मुश्किल से जान बची है। आज एक ऐसी राक्षसी से पाला पड़ गया जो रोज सुबह चार शेरों का नाश्ता करती है।"

यह सुनकर भेड़िया बहुत हँसा। वह सुबह झाड़ी में छिपकर सारा तमाशा देख रहा था। उसने कहा, "भोले बादशाह ! वह तो जट्टी थी, जिसे आपने राक्षसी समझ लिया था। आप इस बार फिर कोशिश करके देखो। अगर बैल आपके हाथ न आए तो मेरा नाम भेड़िया नहीं।"

बहुत कहने-सुनने पर शेर जाट के खेत में जाने के लिए तैयार हो गया। लेकिन उसने भेड़िए से कहा, "तुम अपनी पूँछ मेरी पूँछ से बाँध लो।"

दोनों जने पूँछ बाँधकर चल पड़े। उन्हें देखते ही जाट के होश-हवास गुम हो गए। वह डर से थर-थर काँपने लगा। लेकिन जट्टी बिलकुल नहीं घबराई। भेडिए के पास जाकर उसने कहा, "क्यों रे भेड़िए, तू तो अभी वादा करके गया था कि तू अपनी पूँछ से चार शेर बाँधकर लाएगा ! लेकिन तू तो सिर्फ एक ही शेर लाया है ! वह भी मरियल-सा। भला इसे खाकर मेरी भूख मिट सकती है ? खैर, इस वक्त यही सही।"—इतना कहकर जट्टी आगे बढ़ी।

शेर के होश-हवास उड़ गए। उसने समझा कि भेड़िये ने उसके साथ धोखा किया है। वह फौरन वहाँ से भागा। भेड़िया बहुत चीखा-चिल्लाया, लेकिन शेर ने एक न सुनी। तेजी से भागता चला गया। उधर भेड़िया उसके पीछे-पीछे घिसटता हुआ रास्ते में ही लहू-लुहान होकर मर गया।

जाट और जट्टी आराम से रहने लगे। उन्हें मालूम था कि अब शेर उनके खेत की तरफ फिर कभी नहीं आएगा।

गुणवती लड़की

✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱✱

किसी गाँव में एक आदमी रहता था। उसके पास न जमीन थी, न ही उसे कोई और हुनर आता था। उसके माँ-बाप, दोनों मर चुके थे और नज़दीक का कोई रिश्तेदार भी नहीं था। इसीलिए अभी तक वह कुँवारा था। उसने शादी के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन उसके साथ कोई अपनी लड़की का रिश्ता करने के लिए राज़ी न हुआ।

उसी गाँव में एक चालाक नाई रहता था। उसने सैकड़ों लूले-लँगड़े, काने-भैंगे लड़के-लड़कियों की शादियाँ झूठ बोल-बोल कर करवाई थीं। उस गरीब आदमी ने जाकर नाई से मिन्नत की, ''राजा,[1] जैसे भी हो, मेरा घर बसा दो। मैं जिन्दगी भर तुम्हारा एहसान मानूँगा।''

नाई ने कहा, ''यह भी कोई मुश्किल काम है ? जिससे कहो उसी से तुम्हारी शादी करवा दूँ। बोलो, राजा की लड़की से शादी करोगे ?''

गरीब आदमी ने सोचा कि नाई उसकी हँसी उड़ा रहा है। उसने कहा, ''राजा, तू किसी गरीब लड़की से ही मेरे चार फेरे

---

1. पंजाब में नाई को 'राजा' कहते हैं।

डलवा दे। राजा की लड़की से मुझे क्या वास्ता !"

लेकिन नाई न माना। उसने कहा, "तू किसी धोबी से अच्छी-सी पोशाक माँगकर पहन ले, कहीं से सफेद अरबी घोड़ा ले आ, दस-बारह गीदड़ इकट्ठे कर ले, बाकी सब मैं देख लूंगा।"

गरीब आदमी ने ऐसा ही किया। वह शहर से बाहर एक पेड़ के नीचे गीदड़ों को लेकर खड़ा हो गया।

उधर नाई भागा-भागा राजा के महल में पहुँचा। राजा की इकलौती बेटी अभी तक कुँवारी थी, क्योंकि वह बड़ी सुन्दर और गुणवती थी। कई राजकुमारों ने राजा के पास विवाह के सन्देश भिजवाए थे, लेकिन लड़की ने हर बार 'न' कर दी थी। वह कहती थी, "मैं उसी के साथ शादी करूँगी जो मुझसे भी ज्यादा सुन्दर और गुणवान होगा।"

नाई ने राजा के कान में कहा, "जैसा लड़का आप चाहते हैं, वैसा ही लड़का मिल गया है। वह एक बहुत बड़े देश का राजा है। लेकिन उसकी एक शर्त है। वह यह कि अँधेरा पड़ने पर लड़की को डोली में बैठाकर शहर से बाहर एक खेत में पहुँचा दिया जाए। लड़की के साथ और कोई आदमी न आए। दान-दहेज की उसे कोई जरूरत नहीं, क्योंकि उसके पास सब कुछ है। उसे तो सिर्फ आपकी लड़की चाहिए।"

राजा ने इस बार लड़की से भी सलाह नहीं की, क्योंकि हर बार लड़की 'न' कर देती थी। अँधेरा होते ही राजा लड़की को डोली में बैठाकर शहर से बाहर ले गया।

दूर खेत में गीदड़ शोर मचा रहे थे। राजकुमारों की-सी शानदार पोशाक पहने एक नौजवान सफेद घोड़े पर बैठा था। नाई की बातों से राजा इतना प्रभावित हुआ था कि उसने समझा कि कोई बहुत बड़ा राजा अपनी फौज लेकर शादी करने आया है। उसने खुशी-खुशी

अपनी बेटी को नाई के साथ भेज दिया। जाते वक्त नाई यह भी कह गया, ‘‘आपकी बेटी आपकी घर नहीं आएगी। जब जरूरत होगी तो आपको वहाँ बुला लिया जाएगा।’’

रात को घोड़ा एक मामूली-सी झोंपड़ी के आगे जाकर रुका। राजकुमारी ने देखा कि उस झोंपड़ी में एक टूटी-सी चारपाई और मिट्टी के एक घड़े के सिवा और कोई सामान नहीं था। वह समझ गई कि धोखा किया गया है।

लेकिन राजकुमारी बड़ी अक्लमन्द थी, उसने सोचा, अगर अपनी किस्मत को रोऊँगी तो इससे कोई फायदा नहीं होगा। क्यों न किसी तदबीर से तकदीर को बदल लिया जाए ? अक्ल से तो बड़ी-बड़ी मुश्किलें आसान हो जाती हैं।

उसने अपने पति से कहा, ‘‘जो होना था हो गया। अब तुम कोई काम करो।’’

पति ने कहा, ‘‘मुझे तो कोई काम नहीं आता।’’

यह सुनकर राजकुमारी ने कहा, ‘‘कहीं से सुई-धागा लाओ।’’

उसका पति सुई-धागा माँगकर ले आया। राजकुमारी ने अपनी रेशमी साड़ी फाड़कर किस्म-किस्म की गुड़ियाँ बनाईं और अपने पति से कहा, ‘‘जाओ, इन्हें ले जाकर बेच आओ।’’

वे गुड़ियाँ इतनी सुन्दर थीं कि हाथों-हाथ बिक गईं।

राजकुमारी ने कुछ तिनके इकट्ठे करके मोर बनाया। मोर भी बाजार में फौरन बिक गया।

अबकी बार राजकुमारी ने शहर से तरह-तरह के रंग मँगवाए और काठ का एक घोड़ा बनाया। घोड़े के नीचे पहिए लगाए और उस पर रंग-बिरंगी चित्रकारी की।

शहर के दुकानदारों को यह घोड़ा बहुत पसंद आया। उन्होंने राजकुमारी के पति से कहा कि तुम जितना चाहो पेशगी रुपए ले

जाओ और हमें इसी तरह के और खिलौने लाकर देते रहो।

अब तो राजकुमारी का कारोबार चमक निकला। उसने बहुत से बढ़ई नौकर रख लिये और अपनी देख-रेख में उनसे काठ के खिलौने बनवाने लगी।

धीरे-धीरे राजकुमारी के पास इतना रुपया इकट्ठा हो गया कि उसने एक शानदार महल बनवाया, जो राजा के महल से भी कई गुना बड़ा और सुन्दर था।

एक बार शहर में कलाकारों और दस्तकारों की एक नुमाइश हुई, जिसमें बड़े-बड़े कलाकारों के चित्र, खिलौने और मूर्तियाँ रखी गईं। राजकुमारी ने पान के पत्तों से एक कुटिया तैयार की। नुमायश में सब लोगों ने उस कुटिया की इतनी तारीफ की कि उसी को पहला इनाम मिला।

राजा को इनाम देने के लिए बुलाया गया। जब इनाम देने के लिए राजा गया तो देखा उसकी ही बेटी ने वह कुटिया बनाई है। बेटी ने अपनी सारी कहानी सुनाई और कहा, "पिताजी, आपने तो नाई के बहकावे में आकर मेरी ज़िन्दगी ही बरबाद कर दी थी। एक मूर्ख और अनपढ़ आदमी के पल्ले मुझे बाँध दिया था। अगर मुझे दस्तकारी न आती होती तो मैं भूखों मर गई होती। यह महल, धन-दौलत, नौकर-चाकर, सब मेरी अक्ल और मेहनत का नतीजा है।"

यह सुनकर राजा अपनी गलती पर बहुत पछताया।

नमक-मिर्च

एक राजा के सात बेटियाँ थीं। सातों उसे बहुत प्यार करती थीं। एक दिन उसने अपनी बेटियों को बुलाकर पूछा, ''तुम बारी-बारी से मुझे बताओ कि तुम मुझे कितना चाहती हो ?''

पहली ने कहा, ''आप मुझे लड्डू की तरह अच्छे लगते हैं।''

दूसरी ने कहा, ''पिताजी, आप मुझे बर्फी से भी ज्यादा मीठे लगते हैं।''

तीसरी ने कहा, ''जलेबी की तरह।''

चौथी ने कहा, ''शहद की तरह।''

पाँचवीं ने कहा, ''पिताजी आप मुझे मिसरी की तरह मीठे लगते हैं।''

जब छठी और सातवीं की बारी आई तो छठी ने कहा, ''पिताजी, आप मुझे नमक की तरह अच्छे लगते हैं।''

सातवीं ने कहा, ''मुझे तो आप मिर्च की तरह अच्छे लगते हैं।''

उस लड़की को मिर्च बहुत पसन्द थी।

बाप अपनी उन पाँचों लड़कियों से बहुत खुश हुआ, जिन्होंने कहा था कि वह उन्हें मिठाइयों की तरह मीठा लगता है। छोटी दोनों लड़कियों पर उसे सख्त नाराजगी थी, जिन्होंने कहा था कि वे उसे नमक-मिर्च की तरह प्यार करती हैं।

उसने दोनों छोटी लड़कियों को देश-निकाला दे दिया और पाँचों बड़ी लड़कियों की अच्छे-अच्छे घरों में शादियाँ कर दीं। वे ऐशो-आराम से रहने लगीं।

दोनों छोटी लड़कियाँ एक जंगल में झोंपड़ी बनाकर रहने लगीं। वे जंगल से फल तोड़कर गुजारा करती थीं। एक दिन एक राजकुमार शिकार खेलता हुआ उधर आ निकला। उसने उनमें से बड़ी बहन को देखा और उस पर मोहित हो गया। छोटी बहन उस वक्त बाहर गई हुई थी। राजकुमार ने कहा, "तुम मेरे साथ महल में चलो; मैं तुम्हारे साथ शादी करूँगा।"

लड़की ने कहा, "मेरी बहन आ जाए, उससे पूछकर बताऊँगी।"

राजकुमार ने कहा, "नहीं, तुम्हें इसी वक्त मेरे साथ चलना पड़ेगा।"

वह ज़बर्दस्ती लड़की को अपने घोड़े पर बैठाकर साथ ले चला। लड़की ने जल्दी से तोरई के बीज की एक पुड़िया उठा ली और रास्ते भर वह बीज गिराती रही।

लौटकर जब छोटी बहन ने देखा कि झोंपड़ी खाली है तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। एक बन्दर ने उसे सारी बात बताई। छोटी लड़की तोरई के बीजों को देखती-देखती शहर पहुँच गई। उसने देखा कि महल के दरवाजे तक तोरई के बीजों की लकीर थी। वह समझ गई कि उसकी बहन महल में होगी।

छोटी बहन ने महल के दरवाजे पर दाने भूनने की एक भट्टी लगा ली और भड़भूजे का काम करने लगी। महल के नौकर-चाकर भी उससे दाने भुनवाने आने लगे। एक दिन बड़ी बहन ने भी मकई के दाने भुनवाने को भेजे।

फूलों की तरह खिले हुए दानों को सूँघकर वह कहने लगी,

"इन दानों में तो मुझे अपनी बहन के हाथों की खुशबू आ रही है। उसके सिवा इतने बढ़िया दाने कोई नहीं भून सकता।"

नौकर ने बताया कि एक बड़ी खूबसूरत लड़की महल के बाहर बैठी दाने भून रही है। रानी ने उसे भीतर अपने पास बुलवा लिया यह तो उसकी छोटी बहन थी। दोनों बहनें गले मिलकर बहुत रोईं। बड़ी बहन ने अपनी सारी कहानी सुनाई। छोटी बहन ने बताया कि कैसे वह तोरई के बीजों के पीछे-पीछे महल तक आ पहुँची।

छोटी बहन भी महल में आकर रहने लगी। राजा ने एक अच्छे खूबसूरत युवक से उसकी शादी कर दी।

अब दोनों बहनों ने सोचा कि किसी तरह अपने पिता को भी यहाँ बुलाना चाहिए। रानी ने राजा से कहा, "तुम एक बड़ी दावत दो, जिसमें आसपास के सभी राजा और वज़ीर बुलाए जाएँ।"

राजा ने दावत का प्रबन्ध किया। छप्पन प्रकार के पकवान, मिठाइयाँ और तरह-तरह की खाने की चीज़ें बनवाई गईं। लेकिन रानी ने अपने पिता के सामने सिर्फ मीठी चीजें ही भेजीं। दो-चार मिठाइयाँ खाने के बाद रानी के पिता ने नौकरों से पूछा, "क्या कोई नमकीन चीज नहीं बनी ?"

इसी वक्त रानी और उसकी बहन ने आकर कहा, "पिताजी, आपको सिर्फ मीठी चीज़ें ही पसंद हैं। इसलिए, हम दोनों ने आपके लिए सिर्फ मीठी चीजें ही परोसी थीं। आपको याद है न, जब हमारी बहनों ने कहा था कि आप उन्हें मिठाइयों की तरह अच्छे लगते हैं तो आप कितने खुश हुए थे। हम दोनों बहनों ने कहा था कि आप हमें नमक-मिर्च की तरह प्यारे लगते हैं तो आपने नाराज होकर हमें देश-निकाला दे दिया था ?"

यह सुनकर राजा बड़ा शर्मिन्दा हुआ और उसने अपनी बेटियों से माफी माँगी, जिन्हें इतने बरसों तक जंगल में मुसीबतें उठानी पड़ीं।

आधा

✱✱✱✱✱✱

किसी राजा का एक वज़ीर था। उसके सात पत्नियाँ थीं, लेकिन कोई सन्तान न थी। इसी दुख के मारे एक दिन वजीर सड़क पर उल्टी चारपाई डालकर पायताने की तरफ बैठ गया। सड़क पर आने-जाने वाले उससे हमदर्दी जतलाने लगे। राजा ने भी समझाया कि इस तरह दिल उदास करने से क्या फायदा ! राजा के भी बारह रानियाँ थीं, लेकिन उसके भी कोई सन्तान नहीं थी। लेकिन वज़ीर सिर झुकाए बैठा रहा।

इसी वक्त एक फकीर वहाँ से गुज़रा। उसने वज़ीर से उसकी उदासी का कारण पूछा। वज़ीर ने कहा, "मेरे पास धन, दौलत, मकान सब-कुछ हैं, लेकिन मेरे आँगन में कोई बच्चा नहीं खेलता। यह धन-दौलत मेरे किस काम आएगी ?"

फकीर ने कहा, "बस, इतनी सी बात है ? ले, यह डण्डा अपने पास रख। बाहर से बाहर जंगल में चले जाना। वहाँ आमों का एक पेड़ है। उस पर सात बार डण्डा मारना। सात आम नीचे गिरेंगे। वे सातों आम लाकर अपनी सातों पत्नियों को खिला देना। ईश्वर की मर्ज़ी हुई तो तुम्हारे आँगन में सात बच्चे खेलेंगे।"

वज़ीर ने ऐसा ही किया। वह सात आम लेकर आया और एक-एक आम सभी पत्नियों को दे दिया। छः पत्नियों ने तो आम खा लिये, लेकिन सबसे छोटी पत्नी नहाने के लिए तालाब पर गई

थी, सो उसके हिस्से का आधा आम एक बिल्ली खा गई। बाकी का आधा आम सातवीं पत्नियों ने आकर खा लिया।

समय आने पर छहों पत्नियों के लड़के पैदा हुए। लेकिन सातवीं पत्नी के पेट से आधे लड़के ने जन्म लिया। आधा इसलिए कि कमर तक तो उसका शरीर साबुत था, लेकिन उसकी टाँगें नहीं थीं। इसलिए उसका नाम आधा रख दिया गया।

जब वज़ीर मर गया तो छहों पत्नियों ने अपने लड़कों से कहा, "जाओ, कमाकर लाओ।" लेकिन आधे की माँ बड़ी परेशान हुई। वह सोचने लगी—मेरा आधा कैसे कमाई करेगा ? इसकी तो टाँगें ही नहीं हैं।

लेकिन आधा फुदकता हुआ अपने भाइयों के पीछे-पीछे चल पड़ा। भाई तो आगे निकल गए, आधा एक खेत में से मूली-गाजर तोड़-तोड़ कर खाने लगा।

इतने में जोर से पानी बरसने लगा। सड़क पर एक बारात जा रही थी। जब मूसलाधार पानी बरसा तो बारातियों ने सारे गहने इकट्ठे करके खेत में पड़े एक खाली घड़े में रख दिए। दरअसल वह घड़ा नहीं था। आधे ने ही घड़े का रूप बना लिया था। आधा फुदकता हुआ घर पहुँचा और बोला, "माँ-माँ, दरवाजा खोल, मैं कमाई करके लाया हूँ।"

माँ कीमती गहनों को देखकर हैरान रह गई। उसने गहने ज़मीन में गाड़ दिए।

कुछ दिनों के बाद आधा फिर बाहर गया। इस बार भी सड़क पर एक बारात जा रही थी। इतनी जोर से पानी बरसा कि बाढ़ आ गई। सब बाराती उसमें बह गए, सिर्फ दुल्हन बच गई। आधा दुल्हन को साथ लेकर घर लौट आया और बोला, "माँ-माँ, दरवाजा खोल, तेरे लिए बहू लाया हूँ।"

माँ मारे खुशी के फूली न समाई। बाकी छहों पत्नियों को

बड़ी ईर्ष्या हुई। वे कहने लगीं, "हमारे लड़कों ने तो अभी तक एक पैसा भी नहीं कमाया और यह आधा कमाई के साथ-साथ शादी भी कर लाया है।"

एक दिन आधा किसी खेत में सो रहा था। पास खड़े एक खच्चर ने अपने पैरों से ज़मीन खोदनी शुरू की। अचानक उसमें से ढेर-सी अशर्फियाँ निकल आईं। आधे ने अशर्फियाँ बटोरकर एक गठरी में बाँध लीं और बाकी की अशर्फियाँ खच्चर को खिला दीं। घर आकर उसने कहा, "माँ-माँ, ले इस खच्चर को अन्दर आँगन में बाँध दे। कल सुबह यह अशर्फियों की लीद करेगा।"

सचमुच अगले दिन सारा आँगन सोने की अशर्फियों से भर गया था। किसी ने जाकर राजा को बताया। राजा खुद आधे के घर आया और उसने कहा, "तुम्हें ऐसा खच्चर कहाँ से मिल गया जो अशर्फियों की लीद करता है ?"

आधे ने कहा, "महाराज, मैं कुछ नहीं जानता। मुझे तो यह खेत में खड़ा मिला था।"

राजा खच्चर को अपने दरबार में ले गया। वहाँ भी खच्चर ने अशर्फियों की लीद की। राजा इतना खुश हुआ कि उसने आधे को अपने साथ आधे सिंहासन पर बैठाया और आधा राज उसे दे दिया।

इधर छहों पत्नियों के लड़के घर लौट आए थे। उन्होंने एक पैसे की भी कमाई नहीं की थी और उनके कपड़े फटे हुए थे। उनकी माताओं ने कहा, "लानत है तुम पर, हाथ-पाँव साबुत होते हुए भी तुम निकम्मे हो। तुम लोगों से तो आधा ही अच्छा है जो आधे राज-पाट का मालिक बना हुआ है।"

यह सुनकर छहों लड़कों को बड़ी शर्म आई। जब आधे ने सुना कि उसके सौतेले भाई लौट आए हैं तो उसने उन्हें अच्छे-अच्छे ओहदों पर लगवा दिया। छहों लड़कों की शादी भी हो गई। अब वे बहुत खुश थे।

लेकिन यह खुशी उन्हें आधे की बदौलत ही मिली थी।

मिसर झागड़ू

****

एक सीधा-सादा आदमी था। उसका नाम निहाला था। उसकी बीवी बड़ी चालाक थी। वह चाहती थी कि किसी तरह निहाला परदेस चला जाए और वह पीछे से दूसरी शादी कर ले।

एक दिन उसने निहाले को चार सौ रुपए देकर कहा, "जाओ परदेस जाकर कुछ पैसे कमा लाओ।"

निहाला सफर के लिए घर से निकल पड़ा। रास्ते में उसे एक और आदमी मिल गया। उसका नाम मिसर झागड़ू था। निहाले ने कहा, "मिसर जी, कोई बात सुनाओ, ताकि सफर आराम से कट सके।"

मिसर झागड़ू ने कहा, "मुझे फालतू बात करने की आदत नहीं है, क्योंकि मेरी हर बात बहुत कीमती होती है। एक बात सुनाने के मैं सौ रुपए लूँगा।"

निहाले ने कहा, "मुझे मंजूर है।"

"अच्छा तो सुन, चार आदमियों का कहा कभी न टालना। लाओ सौ रुपए।"

निहाले ने सौ रुपए दे दिए।

थोड़ी देर बाद निहाले ने कहा, "मिसर जी, कोई बात सुनाओ।"

"इस बात को गाँठ बाँध लो, कि घाट छोड़कर ऐसी जगह नहाओ जहाँ कोई न हो।"—मिसर ने दूसरी बात बताई।

"सौ रुपए लाओ।" मिसर ने कहा।

निहाले ने फिर सौ रुपए दे दिए।

निहाले ने कहा, "मिसर जी, अभी मेरे पास दो सौ रुपए और बाकी हैं। आप दो बातें और सुनाइए।"

मिसर झागड़ू ने कहा, "अच्छा, तो सुन ! तीसरी बात यह कि नाव में सबसे पहले चढ़ना और सबसे बाद में उतरना।"

"चौथी बात कौन-सी है ?" निहाले ने पूछा।

"चौथी बात यह है कि अपने दिल का भेद कभी अपनी बीवी को मत बताना।"

निहाले ने ये चारों बातें अच्छी तरह याद कर लीं। मिसर झागड़ू ने कहा, "अच्छा दोस्त, मैं जाता हूँ। कभी मुसीबत पड़े तो मेरे पास आ जाना।"

इसके बाद वह अपने रास्ते पर चल दिया।

इसी वक्त निहाले को चार आदमी दिखाई दिए। वे चारों चोर थे, उन्होंने एक बोरी की तरफ इशारा करके कहा, "जाओ, इसे नदी में फेंक आओ।"

पहले तो निहाला घबराया, फिर उसने चारों की बात मान ली, क्योंकि मिसर झागड़ू ने कहा था कि चार आदमियों की बात कभी नहीं टालनी चाहिए।

वह बोरी को कन्धों पर लादकर ले चला। नदी के किनारे पहुँचकर जब उसने बोरी ज़मीन पर रखी तो उसे 'छन-छन' की आवाज आई। निहाले ने बोरी का मुँह खोला। वहाँ सोने की मोहरों से भरी एक थैली रखी थी। निहाले ने थैली अपने पास रख ली और बोरी में लिपटी लाश को नदी में फेंक आया।

अब उसे मिसर झागड़ की दूसरी बात याद आई। वह घाट छोड़कर एक अलग जगह जाकर नहाने लगा। वहाँ उसे गहनों से भरी एक पोटली मिली, जिसे कोई व्यापारी पीछे छोड़ गया था। निहाले ने उस पोटली को भी अपने पास रख लिया और एक नाव में बैठकर किनारे पहुँच गया।

उसने सोचा, अब मुझे घर लौटना चाहिए। मेरे पास काफी धन-दौलत हो गई है। कहीं ऐसा न हो कि रास्ते में कोई मुझे लूट ले।

जब वह अपने गाँव लौटा तो उसने देखा कि एक कुएँ के भीतर एक तरबूज उग आया है। निहाले ने सोचा, मैं घर जाकर इसी बात पर शर्त बदूँगा। किसी को इस बात पर विश्वास नहीं होगा कि कुएँ में भी तरबूज उग सकता है।

घर पहुँचकर उसे मिसर झागड़ की चौथी बात याद आई कि चालाक बीवी से अपने दिल का कोई भेद नहीं कहना चाहिए उसने सोचा यह बात भी आजमानी चाहिए।

उसने अपनी बीवी को अपनी सारी कमाई सौंपते हुए कहा, "कल मैं शर्त बदकर एक हजार रुपए और कमाऊँगा।"

"सौ कैसे ?" बीवी ने पूछा !

निहाले ने सारी बात सुनाई।

बीवी उसी वक्त भागती हुई गाँव के हलवाई के पास गई और बोली, "कल मेरा आदमी तुमसे शर्त बदेगा। तुम फलाँ कुएँ के पास जाकर उसे तरबूज दिखा देना। तुम शर्त जीत जाओगे। फिर तुम कहना, मुझे एक हजार रुपए नहीं चाहिए। मैं जिस चीज पर हाथ रखूँ वही मुझे मिलनी चाहिए फिर तुम मेरे सिर पर हाथ रख देना। मैं अपने आदमी का सारा पैसा और गहना लेकर तुम्हारे पास आ जाऊँगी।"

हलवाई ने यह बात मान ली। अगले दिन जब निहाले ने शर्त बदी कि कुएँ में भी तरबूज उग सकता है, तो हलवाई ने शर्त मंजूर कर ली और फौरन उस कुएँ पर जाकर तरबूज दिखा दिया। निहाले को बहुत हैरानी हुई। वह समझ गया, हो न हो ये मेरी बीवी की करतूत है। उसने हलवाई से कहा, "मैं शर्त पूरी कर दूँगा। मुझे चार दिनों की मोहलत दो।"

निहाला मिसर झागड़ू के शहर में पहुँचा। गली में कुछ बच्चे खेल रहे थे। निहाले ने पूछा, "मिसर झागड़ू का घर कहाँ है ?" बच्चों ने कहा, "हम बाद में बताएँगे, पहले यह बताओ कि तुम हमें क्या इनाम दोगे ?"

"मैं तुम्हें बहुत-सा गुड़ दूँगा।," निहाले ने कहा।

बच्चों ने उसे मिसर झागड़ू का घर दिखा दिया और इनाम माँगा। निहाले ने उन्हें दुकान से चार आने का गुड़ लेकर दे दिया। लेकिन बच्चे खुश न हुए। वे बार-बार कहने लगे, "हमें गुड़ नहीं चाहिए, हमें तो 'बहुत-सा' चाहिए।"

निहाला बड़े चक्कर में पड़ गया। इसी वक्त मिसर झागड़ू वहाँ आ निकला। उसने पूछा, "निहाले, तू यहाँ कैसे ?"

निहाले ने कहा, "मैं आपसे ही मिलने आया था। यहाँ आकर यह नई मुसीबत खड़ी हो गई है।"

मिसर झागड़ू ने सारी बात सुनी और एक थाली मँगवाकर उसमें गुड़ के दो टुकड़े रख दिए ! एक बहुत छोटा और एक बहुत बड़ा। उसने शरारती लड़कों के मुखिया को बुलाकर पूछा, "तुम्हें कौन-सा टुकड़ा चाहिए ?"

"वह बड़े वाला, जो बहुत-सा है।" लड़के ने बड़े टुकड़े की तरफ हाथ बढ़ाया।

"अब तो तुम्हें बहुत-सा गुड़ मिल गया न ? जाओ, भागो।"

मिसर झागड़ू ने बच्चों से निहाले का पीछा छुड़ाया।

जब वे घर पहुँचे तो निहाले ने अपनी सारी कहानी सुनाई और कहा, "आपने कहा था, अगर कभी तुम पर मुसीबत पड़े तो यहाँ आ जाना। अब मेरी मदद कीजिए।"

मिसर झागड़ू ने कहा, "अच्छा, कल मैं तुम्हारे साथ चलूँगा लेकिन इस शहर के लोग बड़े झगड़ालू हैं। हर बात में बाल की खाल निकालते हैं। तुम घर के बाहर मत जाना। मैं शाम तक लौटूँगा।" यह कहकर मिसर झागड़ू काम से बाहर चला गया।

निहाले को ख्याल आया कि उसके जूते फट गए हैं, गली में जाकर मोची से मरम्मत करवा लेनी चाहिए। उसने एक मोची से जाकर कहा, "मेरा जूता सी दो, मैं तुम्हें खुश कर दूँगा।"

मोची ने जूता सी दिया। निहाले ने उसे इकन्नी दी। मोची बोला, "आपने तो कहा था आप मुझे खुश कर देंगे।" दुअन्नी, चवन्नी, अठन्नी देने पर भी मोची खुश न हुआ। निहाला बड़े चक्कर में पड़ा। मोची से बहस करते-करते शाम हो गई। इसी वक्त मिसर झागड़ू वहाँ से गुज़रा। निहाले ने उसे सारी बात सुनाई। मिसर झागड़ू ने कहा, "तुम घर जाओ, मैं मोची को खुश कर दूँगा।"

मिसर झागड़ू ने एक ढोलची को बुलाकर कहा, "तुम मोची के घर के दरवाज़े के आगे बैठकर ज़ोर-ज़ोर से ढोल बजाना शुरू करो। जब तक वे लोग खुश न हो जाएँ तुम ढोल बजाते रहना। मैं तुम्हें इनाम दूँगा।"

ढोलची जाकर मोची के घर के आगे ढोल बजाने लगा। थोड़ी देर बाद मोची का सारा परिवार ढोल की आवाज से तंग आ गया। उन लोगों ने ढोलची से कहा, "अब तो ढोल बजाना बन्द करो।"

"कैसे करूँ ? जब तक तुम खुश नहीं होओगे, ढोल बजता रहेगा।"

मोची ने कानों पर हाथ लगाकर कहा, "मैं खुश, मेरी घरवाली खुश, मेरे बच्चे खुश, मेरे पड़ोसी खुश अब माफ करो।"

यह सुनकर ढोलची ने मिसर झागड़ू के घर आकर यह बात बताई। इस बार भी निहाले की मुसीबत टल गई।

अगले दिन मिसर झागड़ू ने कहा, "आज दोपहर हम तुम्हारे गाँव चलेंगे। मैं थोड़ा-सा काम निपटा आऊँ। तुम घर से बाहर मत निकलना।"

लेकिन मिसर झागड़ू के जाते ही निहाले को ख्याल आया कि उसे हजामत बनवानी है। वह एक नाई की दुकान पर जा पहुँचा।

"हजामत के कितने पैसे लोगे ?" निहाले ने पूछा।

"कुछ दे देना।" नाई ने जवाब दिया।

हजामत बनवाकर निहाले ने उसे दुअन्नी दी। नाई ने लेने से इनकार कर दिया। निहाले ने चवन्नी दी, फिर भी नाई ने न ली। वह बोला, "मुझे पैसे नहीं चाहिए, बस 'कुछ' दे दो।"

निहाला बड़े चक्कर में पड़ा। दोनों में बहस होने लगी। सारा मुहल्ला इकट्ठा हो गया। इसी वक्त मिसर झागड़ू ने आकर नाई से कहा, "मैं तुम्हें कुछ दे दूँगा। पहले मेरी हजामत बनाओ।"

नाई ने हजामत बना दी। मिसर झागड़ू ने एक बच्चे से दो आने का दही मँगवाया और उसमें कोयले का एक टुकड़ा डालकर ताक पर रख दिया। हजामत बनवाने के बाद मिसर झागड़ू ने नाई से कहा, "यार, ज़रा ताक पर रखा दही तो उठा लाओ।"

नाई दही का कटोरा ले आया। उसने देखा, दही में काले रंग की कोई चीज़ पड़ी है। वह बोला, "अरे इसमें तो कुछ पड़ा है।"

"यह 'कुछ' तुम्हारे लिए ही है। तुम इसे ले लो और दही मुझे दे दो।"

नाई बड़ा शर्मिन्दा हुआ। उसने कोयले का टुकड़ा निकालकर

अपने पास रख लिया।

अब निहाला मिसर झागड़ू को लेकर अपने गाँव आया। निहाले की बीवी बहुत खुश थी। उसने नहा-धो कर इस उम्मीद में नए कपड़े पहने थे कि अब उसे हमेशा के लिए निहाले से छुट्टी मिल जाएगी और वह घर का सारा मालमत्ता लेकर हलवाई के घर चली जाएगी।

मिसर झागड़ू ने निहाले की औरत को एक खिड़की के पास खड़ा कर दिया और खिड़की के सामने एक सीढ़ी लगवा दी। निहाला जाकर हलवाई को बुला लाया।

मिसर झागड़ू ने कहा, "तुम जिस चीज़ को हाथ लगाओगे, वही तुम्हें मिलेगी।"

हलवाई सीढ़ी के डंडे पकड़कर ऊपर चढ़ने लगा। मिसर झागड़ू ने कड़ककर कहा, "बस, बस ! तुमने सबसे पहले सीढ़ी के जिस डंडे को हाथ लगाया था वही तुम्हारा हो गया। तुम सीढ़ी के एक डण्डे के हकदार हो। जल्दी से एक डण्डा निकालो और यहाँ से दफा हो जाओ।"

हलवाई बहुत परेशान और शर्मिन्दा हुआ। वह सोचने लगा—मैं तो न जाने क्या-क्या उम्मीद लेकर आया था, अच्छा बेवकूफ बना ! वह हथौड़ी लेकर सीढ़ी का डण्डा निकालने की कोशिश करने लगा, लेकिन डण्डा अपनी जगह से हिला तक नहीं।

हलवाई थककर चूर हो गया और खिसियाकर अपने घर लौट गया।

चोर चतरा

✱✱✱✱✱✱✱✱✱

किसी शहर में एक राजकुमार रहता था। उसे अपनी शक्ल-सूरत पर बड़ा गुमान था। वह किसी को अपने बराबर सुन्दर नहीं समझता था। उसे दुनिया की कोई लड़की पसन्द नहीं थी। इसलिए उसने अभी तक शादी नहीं की थी।

एक दिन राजकुमार अपने घोड़े पर सवार होकर जा रहा था। सड़क के किनारे एक तिमंजिली हवेली थी जिसकी तीसरी मंज़िल पर एक बड़ी खूबसूरत लड़की खिड़की में से सड़क पर आने-जाने वाले लोगों को देखा करती थी। उसने खिड़की में से राजकुमार को देखा। उसका रंग-रूप उसे बहुत पसन्द आया। लड़की ने छत पर से एक कंकड़ उठाकर राजकुमार की तरफ फेंका। कंकड़ जाकर उसकी आँख में लगा। लड़की खिलखिलाकर हँस पड़ी।

कंकड़ लगने से राजकुमार को बहुत गुस्सा आया। उसने फौरन अपना घोड़ा रोक दिया और अपने नौकरों को हुक्म दिया, "जाकर देखो, किसने यह बदतमीज़ी की है। वह चाहे कोई भी हो, उसे सख्त सज़ा ज़रूर मिलेगी।"

नौकर भागे-भागे हवेली की तीसरी मंज़िल पर गए। उन्होंने देखा, वहाँ एक बड़ी खूबसूरत लड़की बैठी हँस रही थी, हँसती जा रही थी।

जब राजकुमार को इस बात का पता चला तो उसने मन-ही-मन में फैसला किया कि वह उस लड़की को बदतमीजी की सजा ज़रूर देगा।

राजकुमार ने घर जाकर लड़की के माँ-बाप को शादी का सन्देश भेजा। वे खुशी से फूले न समाए कि राजकुमार उनका दामाद बनेगा।

शादी के कुछ दिन बाद ही राजकुमार ने लड़की को छोड़ दिया। वह लड़की बड़ी स्वाभिमानिनी थी। उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि वह किसी दिन राजकुमार से अपने इस अपमान का बदला ज़रूर लेगी।

कुछ महीने बाद उस लड़की के एक लड़का पैदा हुआ। लड़के की शक्ल-सूरत राजकुमार से हू-ब-हू मिलती थी। लड़की ने यह बात राजकुमार से छिपाकर रखी और उस दिन का इन्तज़ार करने लगी। जब उसका बेटा बड़ा होगा।

समय बीतता गया। अब वह लड़का सोलह बरस का जवान हो गया था। एक दिन सुबह सारे शहर में घोषणा हुई कि इस शहर में एक बड़ा होशियार चोर आया है, जिसका नाम चोर चतरा है। वह अपने हाथ की सफाई से बड़ी-बड़ी रकमें गायब कर सकता है। जिसमें हिम्मत हो चोर चतरे को पकड़ दिखाए।

यह खबर राजा तक पहुँची। राजकुमार ही अब राजा बन गया था। उसने शहर के कोतवाल को बुलवाया और हुक्म दिया कि वह फौरन चोर चतरे को पकड़कर उसके सामने पेश करे।

कोतवाल ने अपने कुछ सिपाहियों को हुक्म दिया कि वे अपनी जेबों में ताँबे के नए सिक्के डालकर बाजार में घूमें। जब चोर चतरा उनकी जेब काटने की कोशिश करे तो उसे फौरन पकड़ लिया जाए।

सिपाहियों ने लौटकर कोतवाल को बताया कि उनकी जेब

में रखे सिक्के ज्यों के त्यों मौजूद हैं। किसी ने उनकी जेब नहीं काटी।

अगले दिन फिर चोर चतरे की तरफ से शहर में घोषणा हुई, "लोगों को जेब में ताँबे के सिक्के डालकर घूमते शर्म नहीं आती ? मैंने कई बार जेबों में से सिक्के निकालकर गिने और फिर वहीं रख दिए। मालूम होता है, इस शहर में एक भी रईस नहीं है जो जेब में चाँदी की मुहरें रखे। सभी कंगाल हैं।"

जब यह बात राजा के कानों तक पहुँची तो उसने कोतवाल को डाँटा।

अब तो कोतवाल बहुत घबराया। उसे एक तरकीब सूझी। उसने शहर के चौक में मुहरें बिछवा दीं और जगह-जगह सिपाही तैनात कर दिए। उसे विश्वास था कि जिस वक्त चोर चतरा उन मुहरों को उठाने आएगा, सिपाही उसे फौरन पकड़ लेंगे।

उधर चोर चतरा भी बड़ा उस्ताद था। उसने अपने जूतों के नीचे मोम लगा लिया और बिना आसपास देखे चौक की सड़क पर घूमने लगा। बहुत-सी मुहरें उसके जूतों से चिपक गईं। जब कोतवाल ने अपने सामने मुहरें इकट्ठी करके गिनवाईं तो बीस मुहरें कम थीं।

अगले दिन कोतवाल ने चौक के बीचोंबीच एक शिकंजा रखवा दिया। उसका ख्याल था कि जिस तरह चूहे आकर चूहेदानी में फँस जाते हैं, उसी तरह चोर चतरा खुद-ब-खुद आकर फँस जाएगा।

आधी रात को चोर चतरा एक बुढ़िया का वेश बनाकर कोतवाल के पास गया और पूछने लगा, "कोतवाल साहब ! चौक में आपने क्या रखवा दिया है ?"

"माई, यह शिकंजा है। इसी में चोर चतरा आकर फँस जाएगा।"

बुढ़िया ने हैरानी जताकर कहा, ‘‘अच्छा ! ज़रा मुझे समझाओ तो सही कि तुम चोर चतरे को कैसे पकड़ोगे ?’’

कोतवाल ने अपना रौब दिखाने के लिए समझाया, ‘‘देख, ऐसे।’’

इसी वक्त कोतवाल का पैर फिसलकर शिकंजे में जा फँसा। वह जोर से चीखने-चिल्लाने लगा। बुढ़िया जोर से हँसी और भागकर फिर महल की तरफ चली गई।

कोतवाल चिल्लाया, ‘‘पकड़ो ! पकड़ो ! यही चोर चतरा था जो बुढ़िया का वेश बनाकर आया था !’’

लोग भागे-भागे महल की तरफ गए। जब राजा को पता चला कि चोर चतरा उसके महल में छिपा है तो वह हाथ में नंगी तलवार लेकर भीतर गया। एक कमरे में, मच्छरदानी के भीतर कोई सो रहा था। सिर्फ उसका हाथ बाहर था। उँगली में हीरे की चमचमाती हुई अँगूठी थी। राजा ठिठक गया। यह अँगूठी तो उसने कई बरस पहले शादी के वक्त उस लड़की के हाथ में पहनाई थी, जिसे उसने घर से निकाल दिया था।

राजा ने मच्छरदानी उठाकर देखा। सोलह बरस का एक खूबसूरत नौजवान चादर ताने सो रहा था। उसकी शक्ल हू-ब-हू राजा से मिलती थी।

लड़के ने अँगड़ाई ली और उठ बैठा। उसने राजा को सारी कहानी सुनाई।

राजा ने राजगद्दी चोर चतरे को दे दी जो वास्तव में उसव युवराज था। उसने अपनी माँ को भी महल में बुला लिया।

□□□

देश-विदेश की सचित्र लोककथाएं

हिमाचल की लोककथाएं
बिहार की लोककथाएं
राजस्थान की लोककथाएं
बंगाल की लोककथाएं (पुरस्कृत)
हरियाणा की लोककथाएं (पुरस्कृत)
पड़ोसी देशों की लोककथाएं
असम की लोककथाएं
पंजाब की लोककथाएं
मध्यप्रदेश की लोककथाएं
उत्तर प्रदेश की लोककथाएं

प्रेमचन्द की सरल, सचित्र बाल कहानियां

बूढ़ी काकी
बड़े घर की बेटी
सुजान भगत
परीक्षा
शतरंज के खिलाड़ी
दो बैलों की कथा
मां की ममता
शिकारी राजकुमार
गुल्ली-डण्डा
रानी सारंधा
नमक का दरोग़ा
रामलीला
पंच परमेश्वर
मन्दिर
ईद का त्योहार
सबसे बड़ा तीर्थ
कुत्ते की कहानी
मेरी कहानी
रामकथा
जंगल की कहानियां

रवीन्द्रनाथ टैगोर की सरल बाल-कहानियां

भोला राजा
काबुलीवाला
पारसमणि
मास्टरजी
तोते की कहानी
राजा का न्याय

'स्वदेश-परिचय' पुस्तकमाला

● *डॉ. भगवतशरण उपाध्याय*

भारतीय संस्कृति की कहानी (पुरस्कृत)
भारतीय चित्रकला की कहानी
भारतीय भवनों की कहानी (पुरस्कृत)
भारतीय संगीत की कहानी (पुरस्कृत)
कितना सुन्दर देश हमारा (पुरस्कृत)
भारत की कहानी (पुरस्कृत)
भारतीय नगरों की कहानी
भारतीय साहित्य की कहानी
भारतीय नदियों की कहानी
हमारे पड़ोसी (पुरस्कृत)

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली